हिन्दु कौन है ?

Pundit Pramod Sharma (Gaur)

हिन्दु शब्द कहाँ से बना पहले इसके बारे में हम विवेचन करेंगे पुराने समय में **'स'** को **'ह'** का उच्चारण करते थे ।इसी प्रकार सप्तसिन्धु के लिए भविष्य पुराण में 'हप्तसिन्धु' शब्द का प्रयोग मिलता है। संस्कृत में एक श्लोक बहुत प्रसिद्ध है कि :- **आशीर्वादं न गृह्णियान्मरुस्थल निवासिनाम्।**

शतायुरिति वक्तव्ये हतायुरिति कथ्यते ॥

अर्थात मारुस्थलवासियों का आशीर्वाद नहीं लेना चाहिये क्योंकि वे शतायु (सौ वर्ष की आयु वाला) ऐसा कहने के स्थान में हतायु (नष्ट आयु) कह देते हैं। ॥ **मादुषं सन् मनुषमित्याचक्षते** (एतरेय ब्राह्मण) **अर्थात** हे जीव तूं दोषयुक्त मत हो, यहाँ पर मादुष को मानुष हो गया इसी प्रकार सिन्धु से हिन्दु भी हुआ है। सिन्धु नदी के इस पार रहने वालों को भी सिन्धु (हिन्दु) कहा जाने लगा ।बार्हस्पत्य शास्त्र में लिखा है:-

हिमालयम् समारभ्य यावदिन्दुसरोवरम्।

तं देवनिर्मितम देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते ॥

हिमालय पर्वत के पहले अक्षर **'हि'** को लिया और इन्दु सरोवर जो पहले कन्या कुमारी को कहते थे उससे इन्दु में से **'न्दु'** को लेकर हिन्दु (हि+न्दु) शब्द की उत्पत्ति हुई।

अब प्रश्न उठता है 'हिन्दु' कौन है ।अनेक विद्वानों ने अपने अपने दृष्टिकोण से इसके लक्षण या परिभाषाएं निर्धारित करने का प्रयत्न किया है। उन सब को संक्षेप रुप मे आपके सामने विवेचन कर रहा हूं।

श्रुति स्मृति आदि शास्त्रों में जो कहे धर्म पर विश्वास एवं निष्ठा रखता है वहीं असल में हिन्दु कहलाने योग्य है।

रामकोष में लिखा है :- **हिन्दुर्दुष्टो न भवति नानार्यो न विदूषकः।**

सद्धर्म पालको विद्वान् श्रौतधर्मपरायणः॥

हिन्दु दुष्ट,अनार्य तथा दूसरे धर्मों की निंदा करने वाला नही होता अपितु सनातन धर्म के अनुसार सत्य का पालक विद्वान हिन्दु होता है। मेरुतंत्र में शिव पार्वती से कहते हैं कि जो दोषों को नष्ट करे वो हिन्दु है।

हीनञ्च दूषयत्वेव स हिन्दुरुच्यते

हिन्दु धर्म बड़ा व्यापक है वह अन्यान्य विविधताओं मत-मतान्तरों और सम्प्रदायों को अपने में समाहित किए हुए है ।यद्यपि सामुहिक रुप से उनमें ज्ञान, भक्ति और परिस्थितियों के अनुसार कभी किसी का प्राधान्य रहा और कभी किसी का। इस लिए एक ही हिन्दु धर्म में अनयान्य सम्प्रदायों ने जन्म लिया लेकिन अपने मूल में उन्होंने हिन्दुत्व के भाव को सदा ही बनाए रखा। इसीलिए एक विद्वान ने लिखा है कि **सनातन धर्म हिन्दु संस्कृति की आत्मा** है जैन-धर्म हृदय बौद्ध धर्म बुद्धि है सिक्ख धर्म बाहु है और शाक्त धर्म वीर्य है गाणपत्य धर्म पेट है सौर धर्म तेज है और धर्मों को भी सनातन धर्म के भिन्न-भिन्न अंग प्रत्यंग मान लेना चाहिए।

मध्य युग में जब हिन्दुत्व को आधात पहुँचे तो उस पर पुनर्विचार हुआ और हिन्दु के निश्चित लक्षण बनाने के प्रयत्न में एक विचारक ने लिखा है :-

ॐकार मूल मन्त्राढ्यः पुनर्जन्मदृढ़ाशय।
गोभक्तो भारत गुरुर्हिन्दुर्हिनत्वदूषकः॥

अर्थात 1. ॐकार जिसका मूल मन्त्र हो
2. पुनर्जन्म में दृढ़ विश्वास रखता हो
3. गाय को पूज्य मानता हो
4. भारत ही जिसका गुरु धर हो
5. हिंसा को निन्द्य मानने वाला हो। जो इन सब बातों को मानने वाला, वो हिन्दू है।

अंत में निष्कर्षस्वरुप मैं यह कहूँगा कि जो भारत को अपनी मातृभूमि पितृ-भूमि तथा पुण्य-भूमि मानता है,अर्थात यहाँ के साहित्य,दर्शन,कला,धर्म,रीति-रिवाज और परम्पराएँ नहीं,अपितु यहाँ के नदियाँ,वन पर्वत,तीर्थ सभी जड़ तत्वों से भी जिसका रागात्मक सम्बन्ध है और यहाँ के प्राचीन ऋषि-मुनि हमारे पूर्वज,
महापुरुषों के प्रति जो पूज्य बुद्धि और श्रद्धा रखता है,वही सच्चे अर्थों में हिन्दु है।

Jai Shree Radhe